बेगमो की बेटी

(नाटक शुरू होने पर पृष्ठ भूमि में शोर-शराबे की आवाज़ ऊंची होती है। शोर-शराबे में फिर वार्तालाप के रूप में आवाज़ें ऊंची होती हैं।)

एक : कौन इस क़त्ल का जिम्मेदार है ?

एक : सुना है ऊंचे बास वाला पाला सिंह मारा गया।

दो : लाश खुले मैदान में पड़ी है।

एक : क्यों, कुत्तों ने नहीं नोची ?

दो : कैसी बातें करते हो ?

एक : ऐसे लोगों की लाशें कुत्ते ही नोचते हैं।

दो : ऊपरवाले का इंसाफ बड़ा ताकतवर है।

एक : पर ग़रीब की आह उससे भी दमदार होती है।

दो : क्या ख़्याल है, किसने मारा होगा ?

एक : अभी तक तो कोई पता नहीं चला।

दो : चलो चलकर देखें।

एक : हो, चलो चलकर देखें।

(मंच पर मास्टरनी आती है और दर्शकों से पूरे आत्मविश्वास के साथ मुखातिब होती है।)

मास्टरनी : यह क़त्ल मैंने किया है। मैं इस गांव की स्कूल के मास्टरनी हूं। यह क़त्ल मैंने क्यों किया ? यह बहुत लंबी कहानी है और मैं यह कहानी एक नाटक के रूप में सुनाऊंगी। मैं पुलिस के सामने कोई बयान नहीं दूंगी। क्यों दूं ? ज़मीर पर इस क़त्ल का कोई भार नहीं। यहां हर रोज़ अच्छे लोगों के क़त्ल हो रहे हैं, किसी की ज़मीर लानत नहीं भेजती। निर्दोषों को क़त्ल कर दिया जाता है, किसी की सेहत पर फर्क नहीं पड़ता, फिर मैं क्यों अपनी ज़मीर पर भार डालूं ? मरने

वाला धरती पर रेंगता एक कीड़ा था। उसका मरना ठीक हुआ या ग़लत, इसका फैसला नाटक देखने के बाद आप लोगों को करना है। मैं खुद इस नाटक की पात्र हूं। कहानी मेरे स्कूल के चौकीदार से शुरू होती है। बेशक वह नौकरी से रिटायर हो गया है, पर उसने चौकीदारी नहीं छोड़ी और बाकायदा हर रोज़ आता है।

(मास्टरनी मंच से एक तरफ से बाहर चली जाती है। दूसरी तरफ से बूढ़ा चौकीदार धीरे-धीरे चलता हुआ आकर बेंच पर बैठ जाता है।)

चौकीदार : *(ऊपर की तरफ मुंह करके)* अरे ऊपर वाले, अब उठा भी ले मुझे, यहां कौन से पहाड़ तोड़ रहा हूं, ओ खुदा अब अपने पास बुला ले और स्यापा ख़त्म कर। *(पाला सिंह का प्रवेश)*

पाला सिंह : चौकीकार, किससे बातें कर रहा है ? कहीं हमारी चाची जलकौर की याद तो नहीं आ रही ?

चौकीदार : उसी को याद कर रहा हूं, वो कमज़ात खुद तो इस जहान से चली गई और सुखी हो गई, मुझे छोड़ गई दुख भोगने के लिए।

पाला सिंह : तुझे क्या दुख है ?

चौकीदार : दुख ही दुख हैं, सुख कौन सा है ? तू तो सरदार जानता है, जवानी के दिनों में काम करने में कोई कमी छोड़ी ? बैल की तरह खटते रहे, लड़कों को पढ़ाया, काम धंधे पर लगवाया। ये सब किया कि नहीं ?

पाला सिंह : किया, सबकुछ किया।

चौकीदार : क्या क़द्र जानी उन्होंने मेरी ? सुबह-शाम मुझे बेइज्ज़त करते हैं, उनके लिए तो मैं कंकर-पत्थर हू घर में, ठोकर मारी इधर, ठोकर मारी उधर।

पाला सिंह : तो इसलिए तू स्कूल में आ जाता है ?

चौकीदार : यहां दिल को ज़रा सुकून मिल जाता है, घर में क्या है ? पता नहीं कंजर एक झबरीली सी कुतिया कहां से ले आए, बस सारा परिवार उसी को दुलारता रहता है, उसी को पुचकारता है। हमारी कोई बात ही नहीं पूछता... पर छोड़ सरदार इन बातों को, यह बता तू कैसे आया है ?

पाला सिंह : बस यूं ही *(इधर-उधर देखकर)* तेरी मास्टरनी नहीं आई अभी तक ?

चौकीदार : क्यों, उससे कोई काम ?

पाला सिंह : नहीं, बस यूं ही 'दर्शन-दीदार' कर लेते।

चौकीदार : 'दर्शन-दीदार' मैं समझा नहीं?

पाला सिंह : सुंदर चीज़ है चौकीदार, तुम्हें तो पता है, हम सुंदर चीज़ों के शौकीन हैं।

चौकीदार : हां, यह तो तुम्हारा खानदानी पेशा है।

पाला सिंह : क्या कहा?

चौकीदार : कुछ नहीं... *(मास्टरनी को आते देखकर)* लो आ गईं हैं बहन जी!

मास्टरनी : क्या बात है, चाचा?

चौकीदार : बेटी, ये ऊंचे बास वाले सरदार पाला सिंह हैं, इनको तुमसे कोई काम है।

मास्टरनी : क्यों, इन्होंने कोई बच्चा स्कूल में दाखिल करवाना है?

चौकीदार : नहीं बेटी, ये तो खुद दाखिल होना चाहते हैं।

पाला सिंह : हां, अगर आपकी मेहरबानी हो जाए।

मास्टरनी : क्यों, पहले पढ़ाई नहीं की?

पाला सिंह : पहली पढ़ाई रह गई पीछे।

मास्टरनी : तो सरदार, अपनी मां को साथ लेकर आना।

पाला सिंह : मां को क्यों?

मास्टरनी : यहां बच्चो का दाखिला करवाने मांएं ही आती हैं।
(मास्टरनी दूसरी ओर जाने के लिए मुड़ जाती है, पाला सिंह उसके पीछे जाता है। मास्टरनी बाहर चली जाती है।)

चौकीदार : *(जब पाला सिंह का मुंह दूसरी तरफ है)* हां, तेरे जैसों के बाप का तो पता नहीं होता।

पाला सिंह : चौकीदार, ये तेरी मास्टरनी तो बड़ा तीखा बोलती है।

चौकीदार : हां, वो तो बोलती है।

पाला सिंह : इसे नहीं मालूम हम कौन होते हैं?

चौकीदार : तुम ज़ोरावर हो, सारा गांव तुम्हारे से डरता है।

पाला सिंह : चौकीदार, ये तू मेरी तारीफ कर रहा है या बेइज्ज़ती।

चौकीदार : लो, बेइज्ज़ती क्यों? ज़ोरावर बनना कोई आसान बात है? जिगर वाला ही कर सकता है। हम लोगों की जुर्रत कहां?

पाला सिंह : अच्छा, अच्छा ठीक है। *(जाने के लिए मुड़ता है।)*

चौकीदार : सरदार, तेरे से एक बात करनी है।

पाला सिंह : क्या बात करनी है?

चौकीदार : ये मास्टरनी अच्छी लड़की है, बच्चों को पढ़ाती है। इसे तंग करके तुम्हें क्या हासिल होगा?

पाला सिंह : बस मज़ा आएगा।

चौकीदार : मज़ा?

पाला सिंह : हां, जो लड़की अकड़कर चलती हो, वो एकदिन पैरों में गिरी हो, इससे बड़ी मज़े की बात और क्या हो सकती है?

चौकीदार : बड़ी हिम्मतवाली है, लड़की सुंदर हो, सलोनी हो अकड़कर खड़ी हो और इस इलाके का नामी सरदार कदमों में गिरा पड़ा हो, फिर नज़ारा कैसा लगेगा?

पाला सिंह : चौकीदार तुझे हमारी ताकत का पता नहीं। इलाके में किसी बदमाश ने बदमाशी करनी हो तो पहले हमसे पूछता है, पुलिस ने कोई कार्रवाई करनी हो तो पहले हमें ख़बर करती है, ये तेरी मास्टरनी हमारे सामने इस तरह अकड़ती है जैसे कह रही हो, 'हम किसी की क्या परवाह करते हैं।'

चौकीदार : हो सकता है इसे किसी की शह हो?

पाला सिंह : शह क्या, हुस्न का ग़ुरूर है, इस तरह की हमने बहुत खा-पी रखी हैं।

चौकीदार : हां, यह तो किसी से क्या भूला है।

पाला सिंह : सैंतालीस में हमारे बूढ़े का भी यही काम था, इसे समझा देना, हमसे टक्कर न ले, हमारे हाथ बहुत ऊपर तक हैं। *(जाता है।)*

चौकीदार : हां, सरदार, तुम्हारे हाथ बहुत ऊपर तक हैं, इधर भी हाथ मार जाते हो, और उधर भी।

(मास्टरनी आती है।)

मास्टरनी : चाचा, ये तेरा ऊंचे बास वाला सरदार पाला सिंह क्या कहकर गया है?

चौकीदार : बेटी, उस आदमी को मुंह लगाना ठीक नहीं।

मास्टरनी : *(दूसरी तरफ)* इसके मुंह लगने ही तो मैं यहां आई हूं। *(चाचा से)* क्यों ये कोई खास आदमी है?

चौकीदार : हां, बेटी खास खानदानी आदमी है।

मास्टरनी : खानदानी?

चौकीदार : हां, तीन पीढ़ियों से बदमाशी करना ही इनका खानदानी पेशा है। सैंतालीस में इसके बाप ने बड़े कारनामे किए।

मास्टरनी : सैंतालीस में ? वो किस तरह चाचा ?

चौकीदार : काम तो इनके पहले भी यही थे। पहाड़ों से मजबूर औरतों को खरीदना और फिर कलकत्ता, बम्बई बेच आना। दंगों के दिनों में यह काम और भी आसान हो गया।

मास्टरनी : वो किस तरह ?

चौकीदार : पहले तो किसी मजबूर बाप या मजबूर भाई से सौदा करना पड़ता था, कुछ देना भी पड़ता था। पर फसाद के दिनों में यह भी नहीं करना पड़ता था। दंगे-फसाद के दिनों में इस तरह के लोग फायदा उठा जाते हैं।

मास्टरनी : और चाचा, जुम्मे कुम्हार की बेटी को भी ये ही उठा ले गए थे ?

चौकीदार : हां, पर तुम्हें कैसे पता ?

मास्टरनी : गांव वालों ने ही बताया है। हां चाचा, अगर दंगे-फसाद के दिनों में इस तरह के बुरे आदमी फायदा उठा सकते हैं तो भले आदमी भी अपना दांव खेल सकते हैं। तेरे इस पाला सिंह का भी कोई बंदोबस्त करना पड़ेगा।

चौकीदार : इसमें कोई क्या कर सकता है ?

मास्टरनी : तो फिर बाबा उनको कहकर देखूंगी।

चौकीदार : तुम उन्हें जानती हो ?

मास्टरनी : सीधा तो नहीं जानती, पर रास्ता तो ढूंढ़ा ही जा सकता है।

चौकीदार : ढूंढ़कर कहोगी क्या ?

मास्टरनी : यही कहूंगी कि अगर आप लोगों की सरकार से लड़ाई है तो वो जी भर लड़ो, पर उन आदमियों की लगाम तो कसो जो तुम्हारे नाम पर गांव में गुंडागर्दी करते हैं।

चौकीदार : यह तो लड़ाई मोल लेने वाली बात है।

मास्टरनी : हां, चाचा यह लड़ाई ही तो है और लड़ाई में पीछे नहीं हटा जा सकता *(जाती है।)*

चौकीदार : *(उसके जाने के बाद अपने आप से)* देख भई आला सिंह, तू हमेशा अपने घर की जंग के बारे में ही सोचता रहता है, पर यहां वे लोग भी हैं जो बड़े बड़े युद्धों की तैयारी में है... *(उठते हुए)* लानत है आला सिंह तुझे, लाख लानत, अपने परिवार के बारे में ही सोचता रहा और मिला क्या ? ठोकरें! *(जाते हुए)* लानत है आला सिंह, आला, लानत है तुम पर लानत है *(दर्शकों की ओर इशारा करके)* इन्हें भी

लानत है जो हमेशा अपने बारे में ही सोचते हैं। *(लानत है, लानत है कहता हुआ बाहर चला जात है।)*

दूसरा दृश्य

(बाजाजी मास्टरनी को समझाते हुए मंच पर आते हैं।)

बाबाजी : पर बेटी तू क्यों नहीं समझती कि यह खेल खतरे से खली नहीं, पाला सिंह बहुत बुरा आदमी है।

मास्टरनी : खतरा तो बाबाजी हर खेल में होता है। पर मैं आपको किसी मुसीबत में नहीं डालना चाहती, अगर मेरे यहां रहने से कोई खतरा है तो मैं यहां से चली जाऊंगी।

बाबाजी : अच्छा फिर तो इलाके में मेरी बड़ी बड़ाई होंगी कि बाबा ज्वाला सिंह किसी बहन-बेटी की रक्षा नहीं कर सकता।

मास्टरनी : पर बेटी यह भी तो नहीं चाहेगी, कि उसकी छेड़ी जंग से किसी ऐसे व्यक्ति का नुक़सान हो जाए जो उस जंग को लड़ना ही न चाहता हो।

बाबाजी : तू किस जंग की बात कर रही है ?

मास्टरनी : वहीं जंग जो इस धरती पर नेकी और बदी के दरम्यान हमेशा लड़ी जाती रही है।

बाबाजी : रात-रातभर किताबें पढ़ती रहती है, बहुत कुछ होगा तेरे पास कहने को। आज मैं सुनना चाहूंगा।

मास्टरनी : *(उसी बहाव में)* अब बाब जी, अपने पंजाब को ही देख लो, लोग कहते हैं कि पंजाब में जो जंग लड़ी जा रही है वो किसी धार्मिक संप्रदाय और सरकार के दरम्यान लड़ी जा रही है, पर यह ग़लत है।

बाबाजी : क्यों इसमें क्या ग़लत है ?

मास्टरनी : ग़लत है कि उस जंग में घुसपैठिए दोनों तरफ घात लगाए बैंठे हैं, लूट-खसोट करते हैं, बहन-बेटियों की इज्ज़त पर डाका डालते हैं। कभी वे खालिस्तानी पहरावे में होते हैं और कभी पुलिस की वर्दी में। इस धरती के हर बेटे, हर बेटी का फ़र्ज बनता है कि इन ग़लत ताकतों के विरुद्ध जंग लड़े।

बाबाजी : और नंगल स्कूल की मास्टरनी का ख़्याल है कि वो ये जंग अकेले दम लड़ सकती है ?

मास्टरनी : नहीं बाबाजी, अकेले दम कोई नहीं लड़ सकता। मेरे पास तो एक

इरादा है, एक विचार है, मैं तो कहती हूं कि साधारण आदमी के लिए देश की खंडता-अखंडता कोई मसला नहीं, नेताओं के लिए बेशक हो, साधारण आदमी की जंग तो इस बात के लिए है कि उसे जीने दिया जाए, उसके बच्चे स्कूल जाएं, स्कूलों में पढ़ रही बहन बेटियों की इज्ज़त की सुरक्षा हो, सहम न हो, डर न हो, गोलिया न चलें, बम न फटें, बुजुर्गों को सरेराह ज़लील न किया जाए, उनकी दाढ़ियां न नोची जाएं और बाबाजी, जब अमन-शांति होती है तो फिर पाला सिंह जैसे लोगों के दांव नहीं चलते... बाबाजी, कहते हैं कि पाला सिंह के बाप ने तीज के दिन भरे त्योहार में जुम्मे कुम्हार की बेटी को दबोच लिया था, उस वक़्त गांव के लोग कहां थे? किसी ने उसकी मदद क्यों नहीं की?

बाबाजी : मदद करना चाहकर भी कोई मदद नहीं कर सका, क्योंकि उसी वक़्त पाकिस्तान वाला शोर मच गया, साथ के गांवों में मुसलमानों पर हमला हो गया, देखते ही देखते घरों में आग लग गई।

मास्टरनी : और बाबाजी, जुम्मे कुम्हार का क्या बना, क्या वो भी पाकिस्तान चला गया?

बाबाजी : नहीं बेटी, यहीं रह गया था। बेटी के ग़म में रोते-रोते उसकी आंखों की रोशनी भी चली गई। पूरा दिन घर में ही पड़ा रहता, जब तक जिया रोटी हमारे घर से जाती रही, कभी खा लेता तो कभी नहीं। आखिरी सांस भी उसने मेरे ही हाथों में ली थी। दरवाज़े की तरफ ताकता रहता था जैसे उसे अपनी बेटी बेगमो का इंतज़ार हो। कभी-कभी उसकी आवाज़ पूरे गांव में गूंजती थी 'जुम्मा जिम्मेदार नहीं, गुंडो का एतबार नहीं। तीज का त्योहार मत मनाओ भाई...।' पता नहीं बेचारी बेगमो का क्या हुआ... बताते हैं कि किरपाल पहले उसके साथ खुद मुंह काला करता रहा फिर कलकत्ता जाकर बेच आया।

मास्टरनी : किरपाल?

बाबाजी : हां किरपाल, इस पाला सिंह का बाप, एक नंबर का बदमाश था, ये पाला सिंह भी उसी के नक्शे कदम पर है।

मास्टरनी : फिर बेगमो की कोई ख़बर आई?

बाबाजी : ख़बर कहां से आनी थी? कलकत्ता, बम्बई के कोठों के जंगलों में कहीं गुम हो गई होगी।

मास्टरनी : हां, गुम हो गई होगी, बेशक जहां किसी ने बचपन गुज़ारा हो उस जगह को कोई कैसे भूल सकता है?

बाबाजी : मैं उन दिनों डायरी लिखा करता था। मैंने सब कुछ डायरी में लिखा है तुम्हें किसी वक़्त पढ़वाऊंगा।

मास्टरनी : किसी वक़्त क्यों बाबाजी, मैं तो आज ही पढ़ूंगी और आज ही क्यों, अभी पढ़ना चाहती हूं।

बाबाजी : अच्छा, मैं लाकर देता हूं।

(बाबाजी अंदर जाते हैं।)

मास्टरनी : *(खुद से)* बाबाजी कहते हैं कि बेगमो कलकत्ता बम्बई के कोठों में गुम हो गई होगी, नहीं वो गुम नहीं हुई, कुछ बरसों की खानाखराबी के बाद उसने एक मेहरबान के साथ अपना घर बसाया और फिर एक बेटी को जन्म दिया। बंगाल में जब इंकलाब की लहर उठी तब वो लड़की छोटी थी। बेगमो ने एक दिन अपनी पूरी कहानी उस बेटी को सुनाई और उस छोटी सी बेटी ने प्रण लिया कि एक न एक दिन वह अपने ननिहाल जाएगी और अपनी मां पर हुए ज़ुल्म का बदला लेगी। *(बाबाजी आते हैं।)*

बाबाजी : ले बेटी, पढ़ ले, इसमें उन दिनों की सारी कहानी है, इसे संभालकर रखना।

मास्टरनी : बाबाजी, यह तो मेरे पास आपकी अमानत है, कीमती अमानत, *(घड़ी की तरफ देखते हुए)* बाबाजी मेरा स्कूल जाने का वक़्त हो गया है। *(जाती है)*

बाबाजी : बड़ी हिम्मतवाली लड़की है। इससे भी अच्छा यह है कि ये मास्टरनी है, अगर बच्चों को पढाने वाले मास्टर और मास्टरनियां इस तरह की हिम्मत वाले हों तो ज़िंदगी में जो कुछ भी ग़लत है, उसे ठीक किया जा सकता है।

तीसरा दृश्य

(चौकीदार आता है।)

चौकीदार : वाहेगुरु जी की फतह, बाबाजी।

बाबाजी : वाहेगुरु जी की फतह, आला सिंह।

चौकीदार : बाबाजी, तुम्हारे इंकलाब की तख्ती तो पुत गई रूस में, अब आपका

क्या प्रोगाम है?

बाबाजी : क्या मतलब?

चौकीदार : मतलब ये कि अब लोगों को क्या कहोगे कि कैसा राज होगा?

बाबाजी : यही कहेंगे कि ऐसा राज हो जिसमें हरेक को बराबर हो, कोई ऊंच नीच न हो, वैसे एक बात पूछूं तुमसे आला सिंह?

चौकीदार : पूछो बाबाजी, एक क्यों सौ पूछो।

बाबाजी : रूस में इंकलाब को धक्का लगने से मैं यह तो समझ सकता हूं कि सरदार बहादुर करनैल सिंह खुश होगा, राय बहादुर बद्रीदास खुश होगा, पर मैं यह नहीं समझ पा रहा कि तेरे जैसे जो दो जून की रोटी से आवाज़ार हों, जिनके लिए हमने उम्रभर संघर्ष किया, वे क्यों खुश होंगे?

चौकीदार : नहीं बाबाजी, हम तो खुश नहीं हैं।

बाबाजी : तो फिर तुम मुझ से सवाल पूछने की बजाय अपने आपसे पूछो कि जो सिद्धांत तुम्हें विश्वास देता है कि तुम भी आदमी हो और आदमियों की तरह जीने का हक़ रखते हों, उसकी एक मोर्चे पर हार होने पर खुश क्यों हुआ जाए?

चौकीदार : *(बात बदलकर)* आपसे एक बात पूछनी थी।

बाबाजी : पूछ।

चौकीदार : बाबाजी, क्या आप जुम्मे कुम्हार की बेटी बेगमो को जानते थे?

बाबाजी : लो भई, जानता क्यों नहीं था,मेरे हाथों में पली बढ़ी थी।

चौकीदार : जब किरपाल उसे तीज के त्योहार पर से उठकर ले गया था, उस वक़्त की उसकी शक्ल आपको याद है?

बाबाजी : याद है, भला उस वक़्त गांव पर लगे दाग को कोई कैसे भूल सकता है, पर तू कहना क्या चाहता है?

चौकीदार : क्या मास्टरनी की शक्ल बेगमो जैसी नहीं?

बाबाजी : *(सोचकर)* हां बिल्कुल वैसी है।

चौकीदार : बाबाजी, हो न हो के मास्टरनी उसी बेगमो की बेटी है। ये इतने गांव छोड़कर इस गांव में नौकरी करने आई है, तो इसके पीछे ज़रूर कोई राज़ है। बाकी बाबाजी, रूस वाली बात तो मैंने यूं ही कह दी थी। सच में लोग भी कैसे पागल हैं, बिना सिर पैर की उड़ाते रहते हैं कि कामरेडों ने 70 साल तक हल्ला मचाए रखा इंकलाब आएगा... इंकलाब आएगा, अब इंकलाब की भी ऐसी-तैसी हो गई। पर

बाबाजी, मैं समझता हूं कि जब तक कमज़ोर आदमी पर जुल्म और अत्याचार होता रहेगा। इंकलाब की ऐसी-तैसी कोई नहीं कर सकता। *(जाता है)*

बाबाजी : ठीक कहता है आला सिंह, जब तक धरती पर नाइंसाफी रहेगी, इंकलाब की बात तो किसी न किसी रूप में चलती ही रहेगी, उसकी ऐसी-तैसी करने वाला कौन पैदा हुआ है। *(फेडआऊट)*

चौथा दृश्य

चौकीदार : बेटी, बेशक अंधेरा हो गया, पर मैं घर-घर इत्तला दे आया हूं कि कल स्कूल में सांस्कृतिक कार्यक्रम है, सभी ज़रूर आएं।

मास्टरनी : तो फिर लोग आएंगे न ?

चौकीदार : दिन के वक़्त तो क्यों नहीं आएंगे ? वैसे लोगों में भय है कि कहीं भीड़ में कोई बम ही न फट जाए। बेटी ये जो कुछ हो रहा है, जो आदमी मर रहे हैं, इनका ज़िम्मेदार कौन है ?

मास्टरनी : दुनिया कहती है कि यह लहर सरकार के विरुद्ध शुरू हुई है। नौजवानों को रोज़गार न मिले, बसों में धक्के पे धक्का लगे, अस्पताल, थाने में किसी साधारण आदमी की पूछ न हो, इस तरह की व्यवस्था के खिलाफ आवाज़ उठनी ही चाहिए। पर बेगुनाहों की मारकाट मेरी समझ से बाहर है, अब तू ही बता बेटी कि ये इंसानों वाले काम हैं ?

मास्टरनी : कौन से चाचा ?

चौकीदार : वही जो लूट-खसोट करते हैं, रातों को घरों में आ घुसते हैं, खाना भी खाते हैं और इज्ज़त-आबरू भी लूटते हैं, ये कोई गुरु गोविंद सिंह वाले कारनामे हैं ?

मास्टरनी : पर चाचा पंथ के अगुआ तो बयान देते हैं कि ये हमारे आदमी नहीं हैं, ये हमारी लहर को बदनाम करने के लिए इस तरह के कारनामे करते हैं।

चौकीदार : फिर वे उन्हें लगाम लगाएं।

मास्टरनी : वे तो हर रोज़ यह कहते हैं इन लोगों के बारे में इत्तला दी जाए।

चौकीदार : पर ये इत्तला कोई कहां दे ? किसी का कोई पता-ठिकाना मालूम हो तो ही... जो लहर चलाते हैं, यह उनकी ज़िम्मेदारी है कि वे देखें कि

इस तरह की कोई कार्रवाई न हो सके। अब अपने गांव के पाला सिंह को ही ले लो या बख्तावर को देख लो, इन्हें कौन नहीं जानता? पर इनकी तो तूती बोलती है। कभी पंथ के नेताओं में से कोई मिले, तो पूछूं कि भले लोगो, सरकार से जी भरकर लड़ो, पर इन पाला सिंह जैसों की लगाम तो कसो... *(जाते हुए)* अच्छा बेटी, मैं जाता हूं कुंडी लगा लो। बाबा जी आज बाहर गए हैं अगर कहे तो मैं ही रात को यहां रुक जाता हूं। घर में कौन सी चूड़े वाली इंतज़ार करती है।

मास्टरनी : नहीं चाचा, किसी बात की फिक्र नहीं। तुम घर जाओ।

चौकीदार : अच्छा कुंडी लगा लो।

(दोनों जाते हैं, मास्टरनी वापिस आ जाती है।)

मास्टरनी : अगर कल का प्रोग्राम कामयाब हो गया, तो फिर गांव में किसी बदमाश की हिम्मत नहीं होगी कि किसी की बहन-बेटी को बुरी नज़र से देख सके। *(दरवाज़े पर दस्तक होती है, मास्टरनी दरवाज़ा खोलती है और पीछे-पीछे पाला सिंह आता है।)*

मास्टरनी : तू इस वक़्त यहां किसलिए आया है?

पाला सिंह : रात के अंधेरे में एक आदमी अकेली औरत के पास क्यों आता है?

मास्टरनी : तूने, ये कुंडी क्यों लगाई है?

पाला सिंह : ऐसे वक़्त एक आदमी कुंडी क्यों लगाता है?

मास्टरनी : ज़िंदगी की खैर चाहता है तो यहां से निकल जा।

पाला सिंह : निकलने के लिए थोड़े ही आया हूं।

मास्टरनी : मैं शोर मचा दूंगी।

पाला सिंह : कौन सुनेगा तेरा शोर? तेरा बाबा यहां है नहीं, मेरी बात मान, हम सुलह कर लेते हैं, तेरे उस चाचा चौकीदार ने बताया कि किसी जंग की बात कर रही है।

मास्टरनी : हां, वहीं स्थायी जंग, जो नेकी और बदी के दरम्यान लड़ी जा रही है।

पाला सिंह : वो बात बहुत पुरानी हो गई है। यहां सरकार के विरुद्ध एक प्रकार की जंग ही छिड़ी हुई है और इस जंग का ज़रूरी अंग यह है कि मेरे जैसों का भी दांव लग जाता है। तुझे मालूम है न कि जब दो बेवकूफ लड़ते हैं तो समझदार फायदा उठाते हैं।

मास्टरनी : इससे आगे कुछ और कहना है क्या?

पाला सिंह : कहना नहीं, बस सुलह कर लें।

मास्टरनी : *(मूड बदलकर)* ये तो अच्छी बात है, मुझे बहुत देर से इंतज़ार था, मुझे पता था तू ज़रूर आएगा।

पाला सिंह : तुझे पता था ?

मास्टरनी : हां।

पाला सिंह : वो किस तरह ?

मास्टरनी : एक अकेली लड़की गांव में रहती हो, किसी गुंडे बदमाश की नीयत बदल जाए, यह कोई अनोखी बात नहीं।

पाला सिंह : फिर ?

मास्टरनी : तो फिर सौदा कर लें।

पाला सिंह : मैंने तो पहले ही कहा था सुलह कर लें।

मास्टरनी : सुलह नहीं सौदा।

पाला सिंह : सौदा ?

मास्टरनी : भोला मत बन, मैं एक शिकार की ताक में हूं, ऐसा शिकार जो मेरी बरसों की तड़प मिटा सके और वो शिकार तू ही है सरदार।

पाला सिंह : तू बेशक शिकार समझ या शिकारी, पर हम तो हैं तेरे हुस्न के पुजारी। एक बार तो संतुष्टि करवा देंगे।

(पाला सिंह उसकी तरफ बढता है, वह कोने में से दरांती उठा लेती है, पाला सिंह पहले रुकता है और फिर धीरे-धीरे पीछे हटता है।)

मास्टरनी : अब पीछे क्यों हट रहा है, बढ़, आगे बढ़।

(पाला सिंह बाहर निकल जाता है। उसकी चीख़ सुनाई देती है जैसे दरांती से उसकी गर्दन काटी गई हो। थोड़ी देर के सन्नाटे के बाद पर्दे के पीछे से आवाज़ें आती हैं।)

एक : जिसने भी मारा है, बहुत बेरहमी से मारा है।

दो : किसी ने बुरी तरह हलाल किया है।

एक : शायद किसी आतंकवादी ने मारा हो।

दो : हां, कल अखबार में तो यही ख़बर आएगी।

(मास्टरनी आती है।)

मास्टरनी : हां, ख़बर तो यही आएगी। जब आप लोग ये पढ़ें कि किसी जवान बहन-बेटी की लाश मिल नहीं रही और यह भी पढ़ें कि कोई लाश खुले मैदान में मिली है तो समझ लिया करें कि पंजाब की धरती की किसी स्वाभिमानी बेटी ने किसी गुंडे बदमाश से अपनी मां, अपनी बहन, अपनी बेटी की लुटी इज्ज़त का बदला ले लिया है, दंगे-

फसादों में ज़रूरी नहीं कि हमेशा बदमाशों का ही दांव लगे, भले आदमी भी अपना खेल सकते हैं। अब आप लोग फैंसला करें कि मैंने ठीक किया है या ग़लत ?

(दर्शकों से सम्बोधित होने की मुद्रा में फ्रीज हो जाती है।)